हिन्दी प्रेस क्लब

जून विशेषांक

प्रवाह

अंक 5 । सन् 2023

कल धूप से परेशां, आज तकलीफ़ बारिश से...
शिकायतें बेशुमार हैं, इंसान की आदत में...

संपादकीय

अनुक्रमणिका

- नई-पुरानी
- डियर सीनियर्स
- जीवनचक्र
- खूनी खंभे
- बातचीत PIEDS से
- BITS अचीवमेंट्स

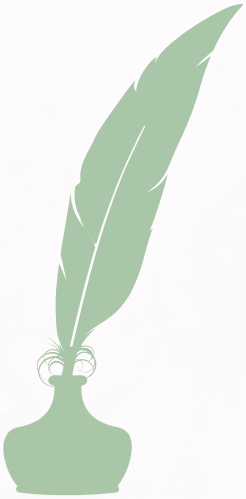

कॉलेज के सफ़र का पहला पड़ाव खत्म होने वाला है, पहले वर्ष में कुछ ही दिन शेष हैं। निश्चित ही कॉलेज सबके लिए एक नया अनुभव है, नया संस्थान, नये लोग, नई दुनिया। पहला सेमेस्टर समाप्त हो चुका है, सब ने कुछ ना कुछ नया किया, जिसमें वे उत्तीर्ण हुए या फिर एक अनुभव ले कर आगे बढ़ गए। कुछ के लिए CG सफलता थी, कुछ के लिए क्लब में चयन होना तो किसी के लिए एक लड़की से वार्तालाप करना ही सफलता थी। सब अपने-अपने स्तर के अनुसार झंडे गाड़ रहे हैं। डुअल डिग्री वाले छात्रों के लिए ये एक नाज़ुक समय है, जिन्हें अपनी पसंदीदा ब्रांच के लिए थोड़ी और मेहनत करनी होगी। सीनियर्स कैम्पस से जा चुके हैं, कुछ हमेशा के लिए तो कुछ एकअंतराल के लिये। उनकी यादों के रूप में हमारे पास बस किताबें, पेटी, लेम्प इत्यादि रखे हुए है। यह सब सीनिअर-जूनियर के एक अनोखे रिश्ते की पहचान हैं।

पिलानी का मौसम वैसे ही चरम सीमा तक जाने के लिए मशहूर है, परन्तु कुछ दिनों से मौसम एक नए रंग में दिख रहा है। पल में गर्मी, पल में बारिश और पल में ठण्ड, यह बदलाब जून में दिखना आम सी हो गयी है। मौसम की ये लीला देख मुझे हम सबके जीवन में आये हुए एक बदलाव की याद दिलाती है। हम सबके जीवन में बारवी कक्षा से ले कर कॉलेज तक जो बदलाव आये हैं, वो भी इस मौसम की नक़ल करते हुए लगते हैं। पहले जो सिर्फ एक कमरे में रहते थे, अब उनका घर एक 328 एकड़ का कॉलेज बन चूका है। 4-5 मित्रों से अब हम दसियों के साथ उठना-बैठना करते हैं। अब हम सबकी प्राथमिकता सिर्फ पढ़ाई तक सीमित नही है, निस्संदेह पढ़ाई को भूला नही सकते, लेकिन अब हम सब अपने शौक भी पूरे करते हैं, अलग-अलग क्लब का हिस्सा बनते हैं और ज़माने की गति के साथ सीखते रहते है। कभी-कभी अचम्भा होता है कि हम बड़े-बड़े फ़ेस्ट आयोजित करवाने जितने काबिल बन रहे हैं। पहले हमारे पास समय सिर्फ़ एक ही काम के लिए रहता था, जिससे हम चिढ़ जाते थे, आज हमारी दिनचर्या खुद ही समझना मुश्किल लगता है। बचपन के स्कूल मास्टर की कही एक बात याद आने लगी है, “खाना खाना भी भूल जाते हो क्या?” जब हम व्यस्त दिनों में एक समय भोजन करते है। खामोशी भरी गर्मी में जब वर्षा से थोड़ी रौनक आ जाती है और बाद में एकसमान सी ठण्ड होती है, थोड़ा गौर करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि स्कूल से ले कर कॉलेज के अंत तक हमें कैसे रंग दिखेंगे।

इस प्रकाशन में ऐसी ही नई घटनाओं के बारे में जानकारियाँ हैं। BITSians के लिए प्रस्तुत विगत समय के कुछ मुख्य समाचार, PIEDS की एक अनोखी पहल, CRISS समेत कुछ कॉलेज की कुछ विजयागाथाएँ और सीनीयर्स के लिए एक भाव भरा सन्देश। साथ ही कुछ रचनात्मक कहानियाँ और कार्टूनिस्ट्स की कलाकृति।

नई-पुरानी

1. फार्मेसी डिपार्टमेंट - बिट्स पिलानी, अब बना देश का तीसरा सबसे अच्छा फार्मेसी डिपार्टमेंट।

2. NAB के ऑडिटोरियम का हुआ नामकरण, अब J.C. NAB Auditorium के नाम से जाना जाएगा।

3. SSMS आतंरिक चुनाव के परिणाम जारी, पुलकित गुप्ता और तानिश नेवटिया बने अध्यक्ष और सचिव।

4. GymG में हुआ स्केटिंग रिंग का निर्माण शुरू।

5. छात्रों की सुविधाओं के लिए SU ने जारी किये प्रिंटिंग और कोरियर सर्विसेज़।

6. डिपार्टमेंट ऑफ विजुअल्स एंड मीडिया (DVM) हुआ प्रोबेशन से बाहर।

7. मेस में आये कुछ नए बदलाव। अब परांठे, चीले और फल भी हुए उपलब्ध।

8. कैम्पस में हुआ PIEDS के नए इन्क्युबेशन सेंटर का निर्माण।

9. छात्राओं का हुआ मीरा से बुद्ध स्थानांतरण।

10. कॉलेज में राजनीति चरम पर जा रही है, 1st year के छात्रों में गुट बनते हुए दिखे।

डियर सीनियर्स

डियर सीनियर्स,
नमस्ते,

आशा करते हैं कि आपका PS1 अच्छा चल रहा होगा। कॉर्पोरेट जीवन में आपका सफर कैसा चल रहा है, यह जानने के लिए हम बहुत उत्सुक हैं, 9 से 5 दफ़्तर में बीतने वाली दिनचर्या कैसी होती है, आपने वहाँ जाकर क्या क्या सीखा।
आप लोगों के बिना कैम्पस काफ़ी खाली-खाली सा लग रहा है। थोड़ा अच्छा भी लगता है और अजीब भी। पहले सेमेस्टर में भी हम कुछ दिन कैम्पस में अकेले रह रहे थे, पर इस बार हम पूरे 2 महीने अकेले रह रहे हैं। खाली कैम्पस में घूमने मे ज़्यादा मज़ा आता है और साथ ही SAC एवं GymG पर भी भीड़ कम हो गई है। पर साथ ही क्लब मीट्स की मस्तियों और उनमें मिलने वाली सीख भी याद आती है। पहले सेमेस्टर में सब कुछ नया था और साथ ही सेमेस्टर भी छोटा था, तो करने को बहुत कुछ था। पर यह सेमेस्टर थोड़ा खाली-खाली सा लग रहा है और कभी-कभी मन में यह सवाल आता है कि क्या हम इस समय का सदुपयोग कर रहे हैं? क्या आपको भी कभी ऐसा महसूस हुआ है? और आपने उस भावना को मिटाने के लिए कभी कुछ किया है?
कुछ ही समय में हमारे compre आने वाले है और सबको, ख़ास करके dualites को परीक्षाओं को लेकर काफ़ी बेचैनी हैं। जल्द ही सबको अपनी dual degree मिलने वाली हैं, तो भावनाएँ अलग-अलग तरह से उमड़ रही हैं। कुछ को अपने न पढ़ने का पछतावा है, तो कुछ एक आख़िरी कोशिश कर रहे हैं कि किसी तरह से अपनी CG सुधार लें। आप लोगों की अपनी dual degree मिलने पर क्या प्रतिक्रियाएँ थी?
आख़िरकार सबसे बड़ी उत्सुकता यह है कि कुछ ही महीनों मे हम भी सीनियर्स बनने वाले हैं। हम हमारे जूनियर्स को क्या सलाह देंगे? वो कौनसी ऐसी चीज़ें हैं जो हमने अनुभव की हैं और जिसकी सलाह हम उन्हें दे सकेंगे? हम क्लब के लिए रिक्रूटमेंट्स कैसे लेंगे? जब हम अपनी branches के कोर्सेज़ पढ़ेंगे तो हमें पछतावा तो नही होगा? क्या आप सबके दिमाग़ में भी यह प्रश्न आए थे ? आपने अपनी इस उत्सुकता और बेचैनी को कैसे संभाला था?
अंततः बातें तो बहुत हैं करने के लिए और अगले सेमेस्टर आपसे फिर मिलकर सलाह भी लेनी है। तब तक उम्मीद करते हैं कि आपका PS1 अच्छा जाए और उससे काफ़ी कुछ सीख कर आएँ।

आपके प्रिय जूनियर्स

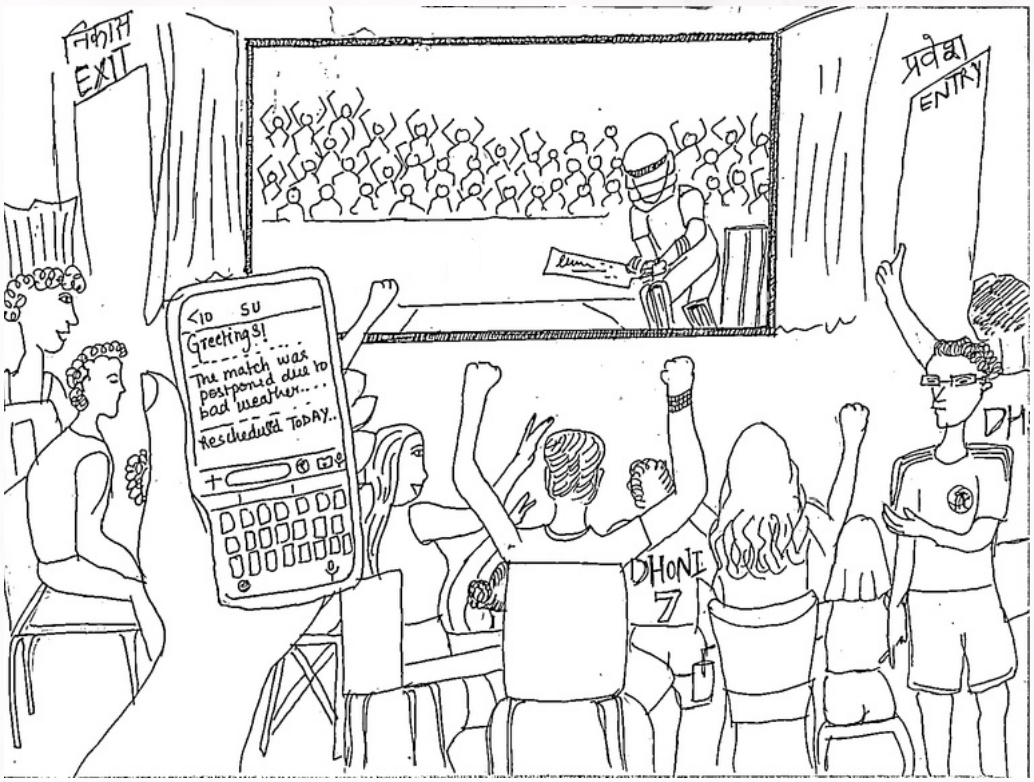

जीवनचक्र

कल रात से ही मेरा बेटा दिव्यम JEE Advanced के परिणाम को लेकर परेशान है, जो कि आज सुबह 10 बजे घोषित किया जाने वाला है। उसे इस हालत में देख मुझे अपनी IIT JEE की तैयारी के दिन याद आ गए। दसवी में 95 % अंक पाने के बाद मेरे पिताजी ने बड़े शौक से कहा था "मेरा बेटा IIT में जाएगा"। कोटा में 2 महीने कोचिंग करने के बाद मेरा एडमिशन बंसल क्लासेज के स्टार बैच में हो गया। और फिर जंग शुरू हुई सवालों के साथ ,रोज़ क्लास जाना और होमवर्क करना, मेहनत का असर टेस्ट के रिजल्ट्स में दिखा और कोचिंग के टेस्ट में मेरी रैंक लगातार बढ़ने लगी। फ़िर दिन आया उस परीक्षा का जिसके पीछे मैंने न जाने कितनी रातों की नींद गंवाई - "IITJEE"। हमारे समय में आजकल की तरह 2 नही 3 पेपर हुआ करते थे। मगर उस दिन न जाने क्यों, ख़ूब कोशिश के बाद भी मुझसे सवाल हल नही हो रहे थे। बहरहाल शाम होते-होते मुझे परिणाम का अंदाजा हो गया,और मुझे ये समझ आ गया कि मुझे कॉलेज और ब्रांच में से किसी एक चीज़ को चुनना पड़ेगा। तो मैंने उस समय के सबसे प्रसिद्ध प्राइवेट कॉलेज - बिट्स पिलानी में जाने का मन बना लिया, जहाँ पर मुझे बारहवी के अंकों के आधार पर कम्पुटर साइंस में दाखिला मिलना तय था। कुछ दिनों के लिए तो IIT में ना जा पाने की कसक मेरे मन में रही पर फिर मन में उत्साह लिए आने वाले कॉलेज जीवन की तैयारियों में जुट गया।

मुझे आज भी वो दिन याद है जब मै अपने माता-पिता के साथ पहली बार बिट्स में आया था , जब मैंने पहली बार क्लॉकटॉवर को देखा, पहली बार सरस्वती मंदिर में गया था और कैसे जब मैं बिरला म्यूज़ियम में जाने ही वाला था और एक सीनियर ने मुझे बिट्स की प्रथा के बारे में अवगत कराया कि 'म्यूज़ियम में जाने वालों की प्लेसमेंट नही होती'। पहले कुछ दिन तो पिलानी की गर्मी के साथ सामंजस्य बैठाने में और नए दोस्त बनाने में ही लग गए।

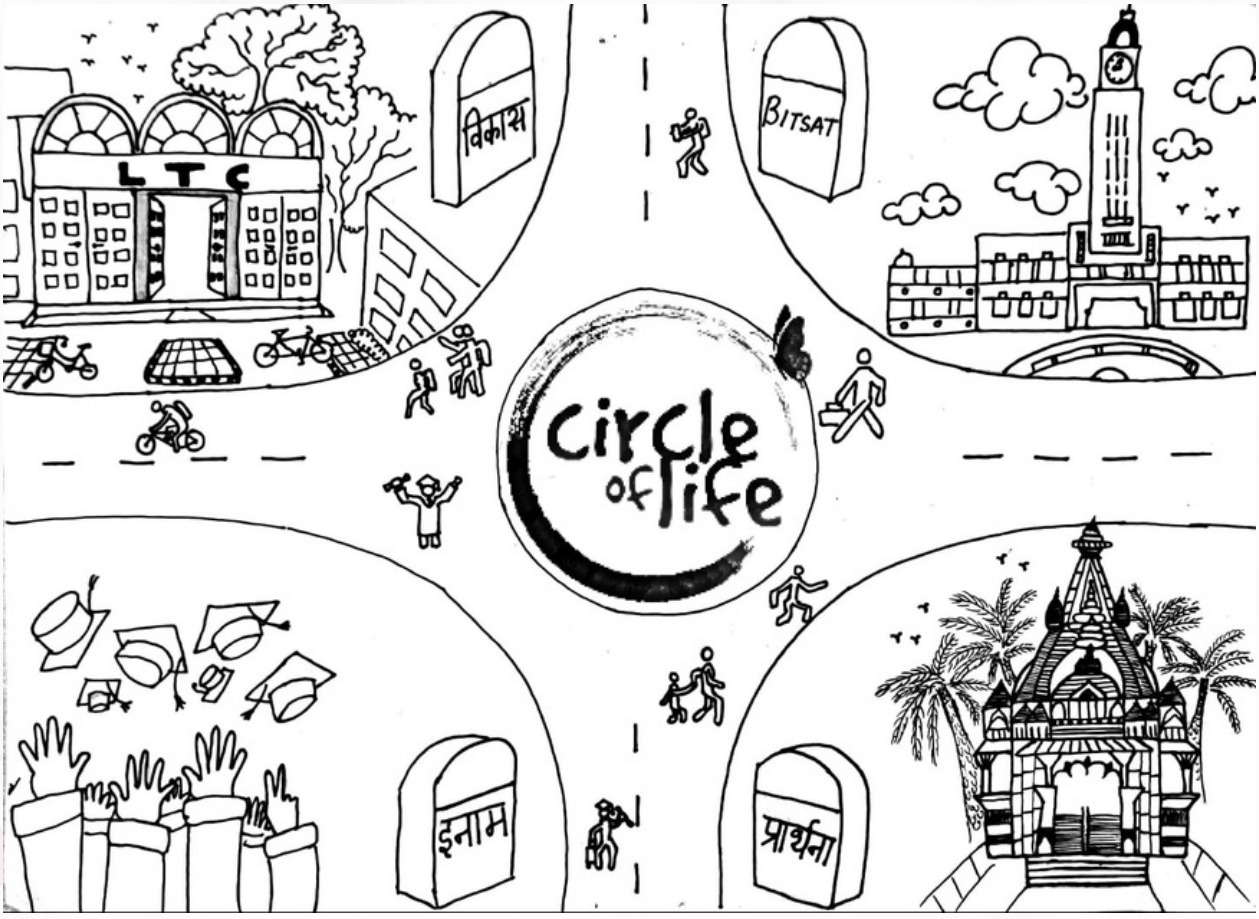

फिर एक रात अचानक किसी ने मेरे दरवाज़े पर दस्तक दी और मुझे कहा गया रूम क्रमांक 3186 में एक सीनियर ने इंटरैक्शन के लिए बुलाया है। मुझे मेडिकल कॉलेज में होने वाली रैगिंग के बारे में तो बहुत कुछ पता था लेकिन ये इंटरेक्शन मेरे लिए कुछ नया था, फिर भी एक नए अनुभव की तलाश में मै रूम क्रमांक 3186 में गया। वहाँ सबसे पहले मुझे अपना परिचय देने का एक नया तरीका सिखाया गया , जिसमे कोई भी त्रुटि होने पर मुझे दोहराने को कहा जाता , उसके बाद मुझे एक टेबल पर खड़ा कर क्लॉकटॉवर के बारे में 5 वाक्य बोलने को कहा गया और फिर उन 5 वाक्यों में क्लॉकटॉवर को विभिन्न विचित्र वस्तुओं से बदल कर दोहराने को कहा गया , वो रात और सीनियर्स के साथ किया वो "इंटरैक्शन " मुझे हमेशा याद रहेगी। वो रात और सीनियर्स के साथ किया वो "इंटरैक्शन " मुझे हमेशा याद रहेगी।

फ़िर सभी लोग अलग-अलग क्लब और डिपार्टमेंट में जाने के जद्दोजहद में लग गए। उसके बाद आया ओएसिस - क्लब रूम में सीनियर्स और दोस्तों के साथ बिताए वो पल , wingies के साथ बिताई वो रातें मैं मरते दम तक नही भूल सकता। सब कुछ ठीक ही चल रहा था और हमारा सामना मिड - सेम नाम के दानव से हुआ हालांकि उसी समय जीवन में पहली बार हमने एक रात में पूरा सिलेबस ख़त्म कर लेने की कला सीखी। इसी तरह न जाने कब हम 1st ईयर से 4th ईयर में आ गये एक बार फिर इंटरव्यूज और ग्रुप डिसकशंस का सिलसिला शुरू हुआ, लेकिन इस बार प्लेसमेंट्स के लिए। हमारे बैच में लगभग सभी लोगों का प्लेसमेंट हो गया।

बहरहाल यह सब सोचते-सोचते कब 10 बज गए पता ही नही चला। काँपतें हाथों के साथ जब मेरे बेटे ने अपना रिजल्ट चेक किया तो रैंक आयी 12776, बिना एक भी पल संकोच किये मेरे बेटे दिव्यम ने मुझसे कहा "पापा मुझे नही जाना IIT, मैं भी आप की तरह बिट्स में ही जाऊंगा"। यह सुन के मुझे अहसास हुआ कि मेरा बेटा समझदार हो गया है। उसने जीवन में समझौता करना सीख लिया है। दरअसल कुछ दिन पहले हुई BITSAT परीक्षा में मेरे बेटे को पिलानी कैंपस में इलेक्ट्रिकल ब्रांच में दाखिला मिल रहा था। इस बार पिलानी जाने के लिए मै कुछ ज़्यादा ही उत्साहित था, जब मैं प्रवेश द्वार से गुज़रा तो मुझे कैंपस में अच्छा खासा बदलाव देखने को मिला, जहाँ हम पहले फुटबॉल खेला करते थे वहाँ अब न्यू अकैडमिक ब्लॉक की स्थापना हो चुकी थी, ज़रूरत का सामान खरीदने के लिए कैंपस में एक सुपरमार्केट खुल चुका है ,एक नया स्टूडेंट एक्टिविटी सेंटर खुल गया, परन्तु कुछ चीज़ें कभी नही बदलती - वो हैं इस कॉलेज में दोस्तों के साथ बिताए पल। और जिन पलों का साक्षी 25 साल पहले मैं था अब उन्ही पलों का साक्षी मेरा बेटा होगा। शायद इसी को "जीवनचक्र " कहा गया है।

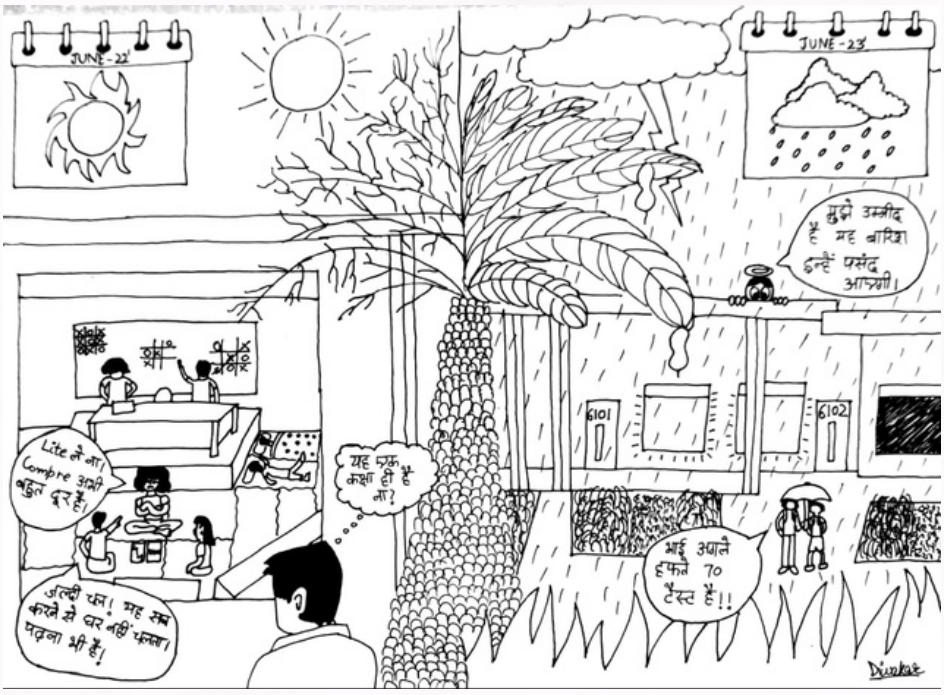

खूनी खंभे

यह बात है कई वर्षों पहले की, जब BITS पिलानी इंजीनियरिंग और विज्ञान की ऊंचाइयों को छू रहा था। देश-भर से होनहार छात्र चयनित होकर यहाँ पढ़ने आने लगे थे। नई शाखाओं की स्थापना हुई और छात्रों के रहने के लिए नए भवनों का निर्माण होने लगा था। किसे पता था कि आने वाले कुछ दिनों में कुछ ऐसी दिल दहला देने वाली घटनाएँ घटने वाली थी? किसे पता था कि कुछ शैतानी ताकतें पूरे कॉलेज को डर के अंधकार में ढकेल देने वाली थी?

एक रोज़ ख़ूब तेज़ बरसात हो रही थी जब तुरंत पुलिस को बुलाया गया - एक निर्माण स्थल पर तीन मज़दूरों की लाशें खून से लतपथ पाई गईं। घटनास्थल का निरीक्षण करने के बाद पुलिस इंस्पेक्टर पंकज राठी जी ने अपना बयान दिया- “पूरे केस की जाँच-पड़ताल के बाद हमने पाया है कि नशे के प्रभाव में देर रात को इन तीन मज़दूरों के बीच हाथा-पाई हुई और उन्होंने एक दूसरे पर काँच की बोतलों से हमला किया।” यह कहकर इंस्पेक्टर राठी ने केस क्लोज़ कर दिया। इस हादसे के बाद BITS पिलानी के कैंपस में एक अजीब-सी शांति छा गई। आकाश में काले बादल छाये रहते। चिड़ियों ने चहचहाना बंद कर दिया था। रोज़ रात को कुत्ते अँधेरी झाड़ियों की ओर देख़ कर भौंकते, मानो इस शांति के बाद आने वाले तूफ़ान की चेतावनी दे रहे हों।

ठीक एक हफ़्ते बाद जो तूफ़ान आया, उसने पूरे कैंपस के लोगों के मन में दहशत भर दी। फर्स्ट ईयर के छात्र राकेश को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया था। उसका जुर्म था- अपने ही एक प्रोफ़ेसर की बेरहमी से हत्या करना। वह सुबह उनसे उनके दफ़्तर में मिलने गया था। जब पूरे डिपार्टमेंट में प्रोफ़ेसर की चीखें गूँज उठी तब कुछ लोग भागे-भागे उनके दफ़्तर पहुँचे। उन्हें जो दृश्य दिखा वो चाहकर भी भुला नहीं पाएँगे, एक पागल छात्र प्रोफ़ेसर की बेजान लाश में छुरा घोंप रहा था। जब इंस्पेक्टर राठी ने राकेश से पूछताछ की, तब राकेश पागलों की तरह चिल्लाने लगता। किसी सवाल पर हँस देता तो कभी फूट-फूट कर रोने लगता। इंस्पेक्टर राठी समझ गए थे कि इस केस में किसी एक्सपर्ट की सलाह की ज़रूरत है।

शाम को दिल्ली से इंस्पेक्टर साहब के करीबी दोस्त सौमित्र घोष पिलानी आते हैं। वह उस समय के बहुत प्रसिद्ध पैरानॉर्मल इन्वेस्टिगेटर हुआ करते थे। उन्होंने राकेश से मुलाकात की और कुछ मंत्र पढ़कर उसे शांत किया। “तुमने अपने प्रोफ़ेसर की हत्या क्यों की, राकेश?”, घोष साहब ने राकेश से अपनी गहरी आवाज़ में पूछा। “वह मुझे म-म-मार देगा!”, राकेश चिल्लाया। “वह कौन है? क्या तुम्हें कोई धमका रहा है?”, “काले कवच वाला स-स-सैनिक - वह मुझे अपनी शमशीर से काट डालेगा!” और यह बोलकर राकेश वापस चीखने लग जाता है।

घोष साहब ने अपने सारे काम छोड़कर उस रहस्यमय ‘सैनिक’ की जड़ तक जाने का फ़ैसला किया। वह BITS के कैंपस में एक कमरे में रुक कर जांच करने लगे। रात को उन्हें इंस्पेक्टर राठी फ़ोन करते हैं - “घोष, एक बुरी खबर है- राकेश ने खुदखुशी कर ली है।” “क्या? कैसे हुआ ये?”, घोष साहब ने आश्चर्य से पूछा। “उसने थाने की खिड़की का कांच तोड़ा और अपनी नस काट ली।”, राठी जी ने हड़बड़ी में जवाब दिया।

अगली सुबह से छात्र अपने कमरों पर ताला लगाकर अपने-अपने घर जाने लगे। पिछले कुछ दिनों की घटनओं ने पूरे BITS में आतंक फैला दिया था। इसी बीच घोष साहब और इंस्पेक्टर राठी को एक और दुर्घटना की जानकारी मिलती है।

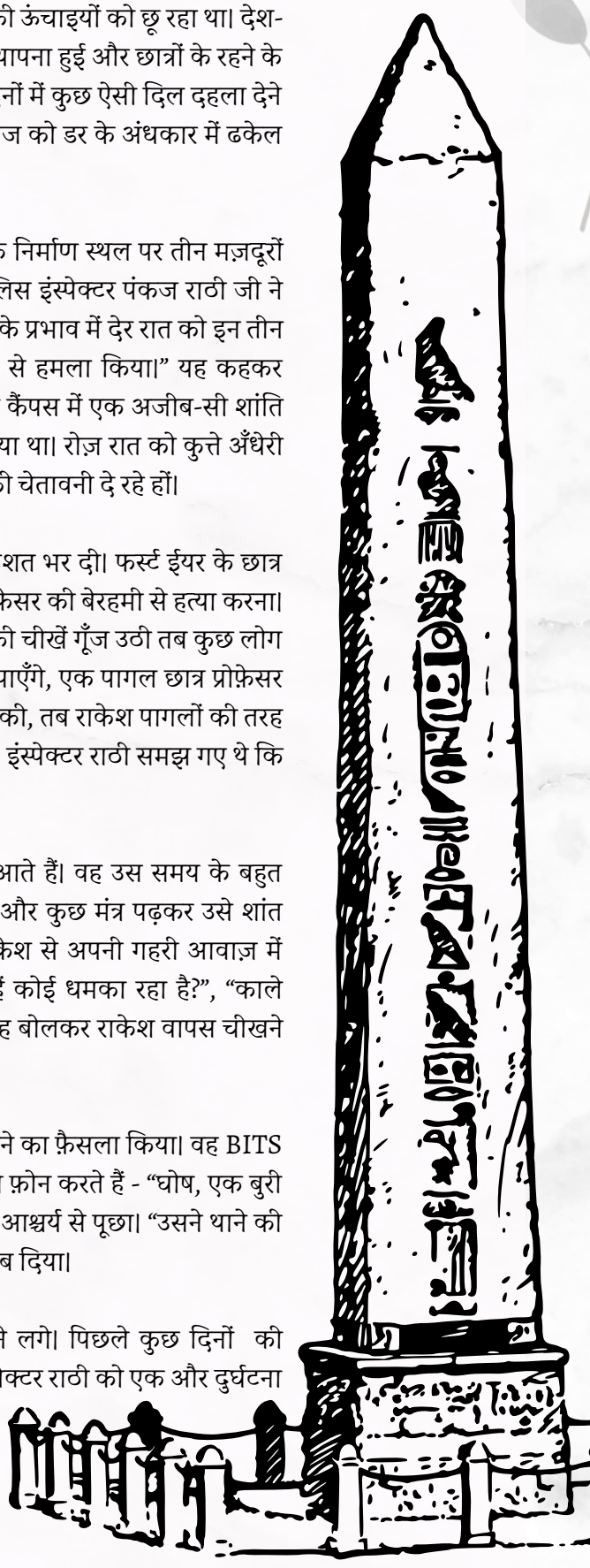

रात को कुछ लोग कैंपस के बाहर से आकर एक फोर्थ ईयर के छात्र केशव की हत्या कर देते हैं। जांच-पड़ताल के बाद ये सामने आया कि केशव को पिलानी की रहने वाली एक लड़की रेखा से प्रेम हो जाता है। रेखा के परिजनों को यह बात पता चलने पर बहुत ग़ुस्सा आता है और वे केशव को मारने के लिए दौड़ते हैं। दोपहर तक तकरीबन 4 लोगों को केशव की हत्या के जुर्म में अरेस्ट कर लिया जाता है। वे लोग भी राकेश की तरह ही पागल हो जाते हैं और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते रहते हैं।

घोष साहब ने पूछताछ करने के बजाये उस 'सैनिक' के राज़ को ढूँढना बेहतर समझा। हो ना हो उस सैनिक की आत्मा ही लोगों को एक दूसरे को मारने के लिए उकसा रही होगी। वह पूरे दिन पुस्तकालय में इतिहास की पुस्तकें पढ़ते हैं और उन तीनों घटनाओं को जोड़ने की कोशिश करते हैं। अचानक उन्हें एक पुरानी किताब मिलती है जिसमें राजस्थान में लड़ी गई जंगो के बारे में विवरण होता है। वह इस सब की जड़ तक पहुच जाते हैं और तुरंत इंस्पेक्टर राठी को फ़ोन करते हैं। "हैलो घोश, एक और बुरी खबर है।", इंस्पेक्टर राठी ने कहा। "यही ना कि उस लड़की ने भी खुदखुशी करली है? मुझे पता चल गया है कि इन सभी हादसों के पीछे किसका हाथ है। कुछ 700 साल पहले पिलानी कि धरती पर राजपूतों और शमशेर मोहम्मद की सेना के बीच लड़ाई हुई थी। शमशेर मोहम्मद जब भारत के शहरों पर हमला करता था, तो खूब लूटपाट और कत्लेआम मचाता था। लेकिन राजपूत सेना के सामने शमशेर मोहम्मद की सेना को आत्मसमर्पण करना पड़ा। शमशेर से अपनी हार बर्दाश्त नही हुई और उसने खुद की जान लेना बेहतर समझा।"तो उस शमशेर मोहम्मद की आत्मा वापस कैसे आ सकती है?", इंस्पेक्टर साहब ने पूछा। "मुझे लगता है कि जहाँ उन मज़दूरों की लाशें मिली थी, उस ज़मीन पर शमशेर मोहम्मद की कब्र थी, जिसपर निर्माण कार्य होने से उसकी आत्मा जाग गई है। वह 700 साल पहले भी इस धरती कि शांति भंग करने आया था, और क्योंकि वह फिर जाग गया है वह अपना मकसद पूरा करना चाहता है। परंतु मेरे पास इसके लिए एक उपाय है - हमें आज रात को उस ही स्थान पर हवन करना होगा।"

उस रात को पिलानी में बहुत तेज़ बरसात हुई। शायद ही कभी यहाँ इतनी तेज़ बारिश हुई होगी जितनी उस रात हुई थी। बिजली चली गई और सड़को पर पानी भर गया था। पूरे पिलानी में अँधेरा छा गया। क्योंकि देर हो रही थी, घोश साहब ने अकेले ही हवन की शुरुवात कर दी थी। वह बैठकर मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे कि दूर उन्हें एक रौशनी दिखाई दी - इंस्पेक्टर राठी अपनी जीप में बैठकर आ रहे थे। इस डर के माहौल में घोश साहब को एक पल के लिए सुकून मिला। वह इस लड़ाई में अकेले नही थे, उनका पुराना मित्र राठी उनका साथ दे रहा था। अचानक से इंस्पेक्टर राठी की गाड़ी सड़क पर फिसल जाती है और जाकर एक दीवार से टकरा जाती है और ज़ोर का धमाका होता है। इस सब के बावजूद घोश साहब हवन को जारी रखते हैं। उन्हें शमशेर मोहम्मद की आत्मा का अपने नज़दीक होने का अहसास हुआ। लेकिन उनके मंत्रों का असर नही हो रहा था। वह उस भटकी हुई आत्मा को शांत नही कर पा रहे थे। अचानक उन्हें एक बात का अहसास हुआ - क्योंकि शमशेर मोहम्मद ने उस समय अपने दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण किया था, अब उसकी आत्मा को शांति तब ही मिलेगी जब वह खुद उसके सामने हार मान जायें। घोश साहब ने आखें बंद की, भगवान का नाम लिया और आग में कूद कर खुद की बलि दे दी।

सुबह इंस्पेक्टर राठी और सौमित्र घोश के शव मिलते हैं। उनकी मौत का सच कॉलेज प्रशासन हमेशा के लिए छुपा देते हैं। आने वाले कुछ दिनों तक BITS कैंपस में एक के बाद एक कई हवन कराए जाते हैं। पंडितों के कहने पर कैंपस के वास्तु - शास्त्र को ठीक किया जाता है। उन 9 दिनों में मरने वाले 9 लोगों की आत्मा की शांति के लिए पूरे कैंपस में 9 खंबों का निर्माण उचित विधि के साथ करवाया जाता है। अगले दो हफ्ते तक सब ठीक रहता है, छात्र वापस आने लगते है और पाठ्यक्रम फिर शुरू हो जाता है। BITS के ऊपर से साया हट जाता है लेकिन बच जाती है कुछ कहानियाँ और कुछ कुर्बानियाँ।

क्या आप जानते हैं कि ये 9 खंभे कहाँ-कहाँ हैं?

बातचीत PIEDS से

PIEDS बिट्स में स्टार्टअप इन्क्यूबेशन को लेकर हाल-फ़िलहाल में काफ़ी चर्चा में रहा है। पेश है PIEDS के incubation lead हरीश मूलचंदानी के साथ बातचीत के कुछ प्रमुख अंश-

प्रश्न 1. PIEDS द्वारा कॉलेज के स्टार्ट-अप को बढ़ावा देने के लिए क्या कदम उठाए जाते हैं? PIEDS के द्वारा किस तरह से स्टार्ट-अप को फंडिंग पहूँचाई जाती है?

उत्तर 1. आज PIEDS सिर्फ बिट्स में ही नही है, बल्कि बिट्स के बाहर भी, अन्य कॉलेजों में भी हमने अपना इकोसिस्टम विकसित किया है। बाहर के कॉलेजों से भी हमने छात्रों को व एलुम्नाई को जोड़ने का सफल प्रयास किया है। हालांकि, 60 प्रतिशत क्षेत्र अभी भी बिट्स के ही वर्तमान व पूर्व छात्रों के विकास के लिए ही प्रयासरत है। हमारे पास विभिन्न वर्गों के लिए अलग-अलग कार्यक्रम हैं, जैसे महिलाओं हेतु सेंटर ऑफ़ वुमेन एंट्रप्रेनरशिप, फिंटेक्क्षेत्र हेतु हम विशिष्ट रूप से फिंटेक्क्स एक्सेलरेटर चला रहे हैं। हमारे पास कई सरकारी योजनाओं का भी समर्थन है, जैसे निधि प्रयास, निधि सीड सपोर्ट स्कीम, स्टार्टअप सीड इंडिया फंड स्कीम, टाइड 2.0 इत्यादि। इन स्कीम्स के माध्यम से हम नए स्टार्टअप्स को 5 लाख से लेकर 1 करोड़ तक का फंड प्रदान कर सकते हैं। मुद्रा समर्थन के साथ-साथ हम स्टार्टअप्स को बेहतरीन मेंटर्स से जोड़ते हैं। मुख्य रूप से मेंटर्स सफल कोर्पोरैट्स या यूनिकॉर्न फाउंडर्स होते हैं। हमने जो स्टार्टअप्स मात्र आइडिया स्टेज पर भी हैं, उनको भी हमने अच्छे मेंटर्स से जोड़ा है। उदाहरण के तौर पर भूवन गुप्ता जी जो बिट्स के ही एलुम्नाई हैं व 2 यूनिकॉर्न स्टार्टअप्स के फाउंडर हैं, वो मात्र एक विचार को अपनी पूरी सहायता दे रहे हैं। इन सब के साथ स्टार्टअप्स को कानूनी सलाह देने में भी हम पीछे नही हैं। संक्षेप में कहा जाए तो हम स्टार्टअप के विचार का उदय होने से लेकर पूर्ण रूप से उपभोक्ता हेतु बाज़ार में उतारने की पूरी जिम्मेदारी लेते हैं।

प्रश्न 2. बीते वर्ष PIEDS के द्वारा कितने स्टार्टअप्स को फंडिंग दी गई? किसी नवीनतम स्टार्टअप का उदाहरण दें।

उत्तर 2. हमें सटीक संख्या का अनुमान तो नही है, लेकिन लगभग 40 स्टार्टअप्स को हमारी ओर से फंडिंग दी गई है और फंडिंग की रकम 4-5 लाख से लेकर 50 लाख तक है। 5-6 स्टार्टअप्स को 50 लाख तक की फंडिंग भी दी गई है। हमारे 2 स्टार्टअप्स को शार्क टैंक इंडिया में पदार्पण का सफल अवसर मिला है। नवगति और क्योर-सी को इस शो के माध्यम से फंडिंग मिली है। बिट्स पिलानी के अतिरिक्त हमारा एक स्टार्टअप अब्योम स्पेस टेक है जिसने सफलता के नए आयाम छूए हैं। इसको सरकार की ओर से समर्थन मिला है और यह काफ़ी प्रचलित भी है। चूंकि यह डीप टेक से संबंधित है, तो इसको पल्लवित होने के लिए और अधिक समय की आवश्यकता है।

प्रश्न 3. PIEDS छात्रों को न सिर्फ फंडिंग दिलवाता है बल्कि यह छात्रों को मेंटरशिप व न्यायिक सलाह भी देता है। इस विषय में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर 3. अभी हमारे पास इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी है। हम अभी हमारी अस्थायी सुविधा में 60 से 70 लोगों को बिठा सकते हैं। पर नई बिल्डिंग का निर्माण जारी है जहां पर एक साथ 200 से 300 लोगों के बैठने की व्यवस्था हो सकेगी। वहां पर कॉन्फ्रेंस रूम व मीटिंग रूम जैसी सुविधाएं भी मिलेंगी। वहां पर छात्रों को विभिन्न प्रकार की लैब्स भी मिलेंगी जहां पर वे अपने उत्पाद को तैयार कर सकते हैं। ये लैब्स किसी भी प्रकार के अकैडमिक प्रयोग की नही होंगी। इनका पूरा प्रयोग नवाचार व स्टार्टअप प्रक्रिया में ही किया जाएगा। कोई भी सुविधा समय बाधित नही रहेगी। सारी लैब्स व सभी कक्ष सप्ताह के सातों दिन चौबीस घंटे खुले रहेंगे। PIEDS चाहता है कि छात्र व एलुमनाई बिट्स पिलानी की इस नई सुविधा का फायदा उठाएं और अपने उत्पाद को यहां तैयार करें। हम चाहते हैं कि बिट्स में बना हुआ उत्पाद पूरे विश्व में अपनी पहचान बनाएँ। हमारे 10 से 15 न्यायिक सलाहकार भी हैं, जो जानकारी जुटाने से लेकर लेखाकर्म तक का पूरा काम देखते हैं। हमारे नवाचार के अनुसार अब कोई भी छात्र अपनी स्टार्टअप को विदेश में भी पंजीकृत करवा सकता है व विदेश की कंपनियों से फन्डिंग भी ले सकता है।

प्रश्न 4. जैसा कि आपने बताया कि PIEDS छात्रों को मेंटरशिप देता है। ऐसे में एक मेंटर का एक आइडिया लाए हुए छात्र के लिए क्या योगदान होता है? किस प्रकार छात्र अपने आइडिया को अपने मेंटर तक पहुंचा सकता है व किस प्रकार वह PIEDS का हिस्सा बन सकता है?

उत्तर 4. कोई भी छात्र जिसके पास अपने उत्पाद को लेकर पूरी जानकारी हो और उसके भीतर एक आन्त्रेनेयोर का जुझारूपन व झलक हो हमें संपर्क कर सकता है। हम PIEDS के अंतर्गत उन्ही छात्रों को मदद देने का प्रयास करते हैं जो अपने उत्पाद को लेकर सजग हैं व काम के लिए अग्रसर है। PIEDS का मकसद कभी भी भीड़ को बढ़ावा देना नही होता है। हम उन छात्रों को समर्थन देने का प्रयास करते हैं, जिनके विचार में दम है व काम के लिए तत्पर है। हमने पिछले डेढ़ वर्ष में 130 के लगभग स्टार्टअप को समर्थन दिया है। काफी सारे स्टार्टअप अपनी कंपनी स्थापित करने में भी सफल हुए हैं। कई स्टार्ट-अप्स ने दूसरे राउंड की फंडिंग भी उठा ली है। प्री-इनक्यूबेशन स्तर में होने पर भी कई स्टार्ट-अप्स ने एक करोड़ तक की फंडिंग उठाने में सफलता प्राप्त की है।

प्रश्न 5. कोई भी छात्र किस प्रकार आपसे मिलकर अपने विचार को आप तक पहुंचा सकता है? इसके लिए आप ने क्या कदम उठाए हैं?

उत्तर 5. हम छात्रों के विचार के लिए हर समय उपलब्ध है। शनिवार का दिन हमने मुख्य रूप से छात्रों के लिए उपलब्ध किया है। कोई भी छात्र आकर अपने विचार को हमारे सम्मुख प्रस्तुत कर सकता है। हम छात्रों को मेंटर्स से जोड़ते हैं, हमारे ब्रेनस्टॉर्मिंग सत्र होते हैं। विचारों को एलुम्नाई या कॉर्पोरेट्स द्वारा मान्यता प्राप्त कराया जाता है। हम दोनों पक्षों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विचार की मान्यता प्राप्ति बहुत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि कभी-कभी एक कठिन मेहनत किए गए विचार का उपयोग विपणन में नही होने के कारण व्यर्थ हो जाता है। हम स्टार्टअप के भविष्य के दृष्टिकोण पर चर्चा करते हैं और मुख्य रूप से मान्यता प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत करते हैं।

प्रश्न 6. आपकी बिट्स पिलानी और इसके बाहर भी स्टार्टअप और उद्यमिता संस्कृति के बारे में क्या राय है, और आपके इसके भविष्य के स्थिति पर क्या विचार हैं?

उत्तर 6. आज के परिप्रेक्ष्य में, सफल स्टार्टअप के संस्थापक वे हैं जो या तो पहले इंडस्ट्री में रह चुके हैं या कॉर्पोरेट जगत से संभंधित रहे है। लेकिन छात्र समुदाय में कोविड-19 महामारी के कारण स्टार्टअप के उत्साह और जुझारूपन में कमी देखने को मिली है। यदि कोविड-19 न होता, तो स्थिति निश्चित रूप से अलग होती। कारण मुख्य रूप से छात्रों को लैब की सुविधाएं ना मिल पाना, समयानुसार उचित सलाह न मिल पाना रहे हैं। कोरोना के कारण एप आधारित या कंप्यूटर आधारित स्टार्ट-अप्स का प्रचलन बढ़ा है, लेकिन कुछ स्टार्ट-अप्स रोबोटिक्स व डीप साइंस जैसे विषयों से भी देखने को मिले हैं।

प्रश्न 7. आपके अनुसार PIEDS में ऐसी क्या खास बात है जो इसे बिट्स पिलानी और इसके बाहर भी एक नए आयाम पर पहुंचा सकता है?

उत्तर 7. PIEDS की विशेषता जो इसे अन्य संगठनों के साथ साझा करती है, वह सरकार द्वारा प्राप्त नकद ग्रांट है। अन्य कोलेजों के मुकाबले एक बेहतरीन पक्ष देने वाली विशेषता है, हमारे संपर्क में स्थित उत्तम एलुम्नाई नेटवर्क एलुम्नाई किसी भी ऐसे गतिविधि के लिए सहायता के लिए तत्पर और उपलब्ध हैं। उनकी बिट्स पिलानी के कल्याण की ओर इच्छा होती है। वे चल रहे स्टार्टअप्स के भविष्य के लिए संसाधनों को प्रदान करने के लिए तैयार हैं। छात्रों और एलुम्नाई के बीच वन-ऑन-वन मीटिंग्स का आयोजन किया जाता है। हमने व्हाट्सएप और टेलीग्राम समूहों की एक श्रृंखला स्थापित की है जहां स्टार्ट-अप उत्साही छात्र सफल कॉर्पोरेट्स से अपनी उद्यमिता की यात्रा और अन्य संदेहों के बारे में पूछ सकते हैं। यदि हम ऐसे ही आगे बढ़ते हैं, तो हम अगले कुछ सालों में निश्चित रूप से इस क्षेत्र में शीर्ष पर होंगे।

BITS अचीवमेंट्स

CRISS ROBOTICS (click कर के पूरी पॉडकास्ट देखें)

बिट्स पिलानी के अंतरिक्ष रोबोटिक्स क्लब CRISS रोबोटिक्स ने स्पेस रोबोटिक्स सोसाइटी द्वारा आयोजित किये जाने वाले इंटरनेशनल रोवर डिज़ाइन प्रतियोगिता में 411 अंकों के साथ पहला स्थान प्राप्त किया। इसके साथ ही साथ यूरोपियन रोवर प्रतियोगिता में भी 40 अंको के साथ टीम ने छठा स्थान प्राप्त किया. इन प्रतियोगिताओं में देश-विदेश की कई नामचीन टीमों ने भाग लिया था। हिंदी प्रेस क्लब से हुई वार्तालाप में टीम के मुख्य तकनीकी ऑफिसर शुस्वाभित शादांगी ने बताया की कैसे क्लब द्वारा अलग-अलग तरह की प्रतियोगिताओं के लिए टीम के अलग-अलग सबसिस्टमस साथ में काम करते हैं. उन्होंने बताया की कैसे इस बार रोवर के प्रेजेंटेशन पर ख़ासा ध्यान दिया जिसका उन्हें काफी फायदा भी मिला। उन्होंने क्लब के द्वारा आने वाले समय में किए जाने वाले प्रोजेक्ट्स और भाग लिए जाने वाली प्रतियोगिताओं के बारे में भी चर्चा की। प्रतियोगिता से जीती हुई 1000$ की धनराशि को भी रोवेर्स की डिज़ाइनिंग और बनावट में लगाने की बात की।

IKRG (click कर के पूरी पॉडकास्ट देखें)

इंस्पायर्ड कार्टर्स ग्रेविटी ने नासा द्वारा आयोजित ह्यूमन एक्स्प्लोरेशन रोवर चेलेंज के प्रोजेक्ट रिव्यू राउंड में प्रथम स्थान व पूरी प्रतियोगिता में बारहवां स्थान प्राप्त कर पूरे कॉलेज का मान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ाया है। हिंदी प्रेस क्लब से बातचीत करते हुए टीम के कप्तान अर्नव सिंह ने बताया कि इन सारी उपलब्धियों के पीछे पूरी टीम की कई दिनों की मेहनत और प्लानिंग थी। उन्होंने रोवर के डिजाईन के बारे में बताते हुए कहा की यह रोवर एक ह्यूमन पावर्ड वेहिकल है जिसके आइडीएशन में पूरी टीम ने महीनों काम किया। उसके बाद उसका एक मॉडल ऑटोकैड सॉफ्टवेयर की मदद से बनाने के बाद उसके निर्माण पर काम चालू किया जायेगा।

हिंदी प्रेस क्लब

खबर वही जो दबाई जाए,
बाकी सब विज्ञापन है...

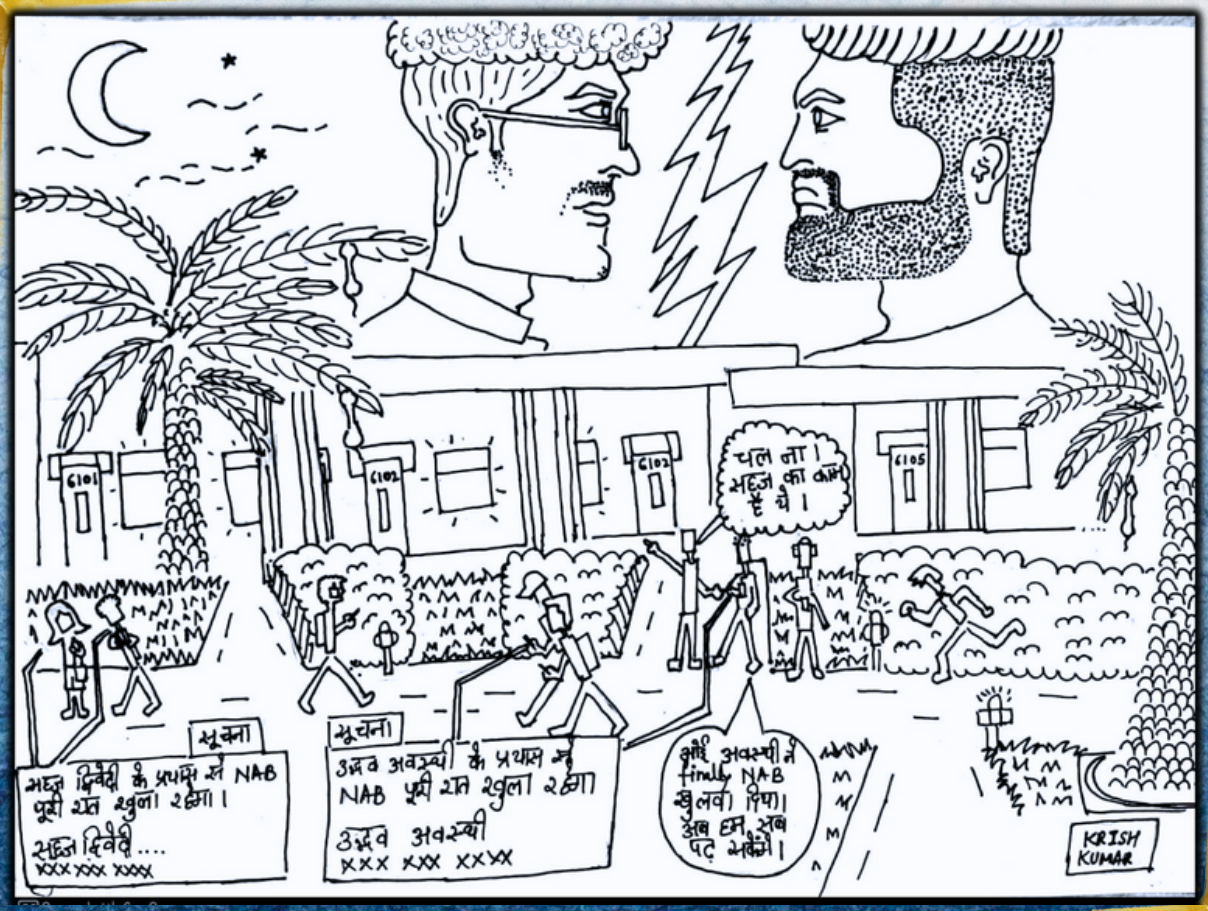

आकाश, आदित्य, ऋत्विक, आर्यमन, सर्वेश, जैनम, आरुषि, आर्ची, निशिका, भव्य, हिमांशी, देव

अवि, वैष्णवी, अनुज, विदित, अमृत ,मल्लिका, सर्वाक्ष, पुलकित, कामरा , वल

दिव्यम, हर्ष, प्रिशा, कविश, अभिन्नआशीष, कौस्तुभ, नमः, प्रीतवर्धन, रिया, विशेष, एकांश, आरुषि, अनुष्का, केदार, मोक्ष, दिवाकर, कृष, भविनी, राहुल, ऋषव, आदित्या, हर्षवर्धन